

ललित निबंधकार कुबेरनाथ राय के 'राम' : कालजयी बृहत्साम

डॉ. आरती अग्रवाल

सहायक प्रवक्त्री (हिन्दी विभाग)

दयानन्द महिला महाविद्यालय

कुरुक्षेत्र, हरियाणा, भारत

ईमेल:- artiagarwal15324@gmail.com

दूरभाष: 7015102723

संक्षेपिका

ललित निबंधकार कुबेरनाथ राय के राम-चिंतन का एकमात्र उद्देश्य है- भारतीय मन में पुरातन काल से प्रतिष्ठित राम के मर्यादा पुरुषोत्तम आदर्श चरित का मानवीय धरातल पर तर्कसम्मत चित्रण करना, ताकि भारतीय मानस इसे अति मानवीय चरित्र न मानकर इसके उज्ज्वल, दिव्य मानवीय रूप से परिचित हो सके। कुबेर का मानना है यों तो रामकथा भारतीयों के लिए ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मानव जाति के लिए मूल्यवान् है। यह मूल्यवत्ता पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक स्तर पर आदर्श पिता, पति, भाई, पत्नी, माँ, मित्र, सहचर, नागरिक और आदर्श शासक के रूप में रामायण में सर्वत्र द्रष्टव्य है और यही इस महाकाव्य की शाश्वत सरसता एवं प्रासंगिकता है। कुबेर के अनुसार रामकथा में रामचन्द्र का जीवन यज्ञोपम है, जो व्यक्ति अपने व्यक्तिगत राग-द्वेष, सुख-दुख से ऊपर उठकर जीवन को यज्ञ में रूपांतरित कर देता है, वही 'कालजयी बृहत्साम' बनकर उभरता है।

कुंजी शब्द : त्रेता - रामायण युग, बृहत् - विराट, उदात्त, विशाल, साम - संगीत, सूर्य, आप्लावित - भरा हुआ, परिपूर्ण।

शोधपत्र

शुक्लोत्तर ललित निबंध परम्परा में कुबेरनाथ राय 'अथाह ज्ञानकोष के कुबेर' रूप में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा पं. विद्यानिवास मिश्र की शृंखला में तीसरे यशस्वी कीर्ति पुरुष हैं। बुद्धि (विचार तत्व) एवं हृदय (भाव तत्व) के लालित्य से समन्वित इनके तीन ललित निबंध संग्रह प्रमुखतः रामकथा पर केन्द्रित हैं- महाकवि की तर्जनी, त्रेता का बृहत्साम तथा रामायण महातीर्थम्। इन रचनाओं में लेखक ने राम के व्यक्तित्व के तप, संकल्प, पुरुषार्थ, त्याग, ज्ञान और सौन्दर्य समन्वित तेजस्वी स्वरूप का उद्घाटन तार्किक एवं दार्शनिक दृष्टि से किया है। लेखक के राम-चिंतन का एकमात्र उद्देश्य है- भारतीय मन में पुरातन काल से प्रतिष्ठित राम के मर्यादा पुरुषोत्तम आदर्श चरित का मानवीय धरातल पर तर्कसम्मत चित्रण करना, ताकि भारतीय मानस इसे अति मानवीय चरित्र न मानकर इसके उज्ज्वल, दिव्य मानवीय रूप से परिचित हो सके।¹

निबंधकार कुबेर 'राम' को त्रेता का बृहत्साम अर्थात् रामायण युग का बृहत् (विराट, उदात्त) साम (गीत, सूर्य) कहते हैं, जिसका अभिप्रेत अर्थ है- रामायण युग के सूर्य के समान उदात्त चरित्रवान् राम का गाना। साम का गूढ़ार्थ है- चरम विस्तार की वह परिधि जहां तक कर्मेन्द्रियां एवं ज्ञानेन्द्रियां किसी वस्तु अथवा सत्ता को देख सकती हैं, अनुभव कर सकती हैं अर्थात् सीमांत या चरम बिंदु। राम कथा इसी अर्थ में त्रेता युग के सर्वश्रेष्ठ नायक के चरित्र का सीमांत रचती है। (तभी महर्षि नारद ने बाल्मीकि जी की रामायण के श्रेष्ठतम कीर्ति पुरुष श्रीराम का जीवन चरित लिखने की प्रेरणा दी) वास्तव में रामावतार अब तक के इतिहास का सर्वोच्च अनुकरणीय पात्र है, जो शील, सौन्दर्य और शक्ति सम्पन्न है। इसीलिए कुबेर 'राम को पूर्णावतार' मानते हैं। वे दृढ़तापूर्वक अपने निबंध 'राम ही

पूर्ण अवतार थे' में यह घोषणा करते हैं कि “जब मैं राम को पूर्णावतार मानता हूँ तो मेरा तात्पर्य बाल्मीकि की अध्यात्म रामायण के समन्वित ‘राम’ अर्थात् मानस के ‘रामाख्यमिश्र हरिम’ से ही है। और इसका कारण यह है कि यह ‘परम सत्ता’ के तीनों सोपानों रस, शील और अध्यात्म पर अपनी चरम पूर्णता के साथ प्रतिष्ठित हैं।”² राम कथा प्रत्येक भारतीय के लिए एक अभय हस्त रचती है।³ इस अभय हस्त का मर्म यही है कि जो व्यक्ति आचरण या शील से युक्त है, वही भयमुक्त होता है। इसीलिए राम को पूर्णावतार मानने की बात कुबेर स्वयं की भावुकता का परिणाम नहीं मानते, अपितु नयी ऐतिहासिक आवश्यकता स्वीकार करते हैं।⁴ आज के भौतिकवादी समृद्धि के युग में पाश्चात्य संस्कृति के प्रबल आकर्षण में, इच्छाशक्ति उन्मत्त होती जा रही है, सम्बेदनहीनता, नीरसता बढ़ती जा रही है, तब हमें ऐसा आदर्श व्यक्तित्व चाहिए जो संयमशीलता और पुरुषार्थ का आदर्श हो। कुबेर की दृष्टि में वे हैं रामचन्द्र। रामचन्द्र क्रिया शक्ति के प्रतीक हैं जिसे निबंधकार धनुर्भंग (सीता स्वयंवर) से बड़ी रोचकता से स्पष्ट करते हैं- “विवाह की शर्त थी धनुर्भंग। धनुष के तीन टुकड़े हो गए- एक चला गया व्योम में, दूसरा पाताल में, मध्यम खंड धरती पर उन्होंने रख दिया।”⁵ इस प्रसंग का प्रतीकात्मक अर्थ यही है कि व्योम अर्थात् आकाश तत्त्व ज्ञान का, पाताल इच्छाओं का तथा धरती क्रिया का द्योतक है। ज्ञान, क्रिया और इच्छा ये तीनों वृत्तियाँ जीवन रूपी धनुष का निर्माण करती हैं। धनुष के मध्य की कड़ी है क्रिया योग या कर्म योग जिसका एक सिरा ज्ञान से जुड़ा है तो दूसरा इच्छा से। ‘राम ने ज्ञानयोग को व्योम में स्थित कर दिया, इच्छा योग (काम) को पाताल की गहराईयों में दबा दिया और मध्य भाग को प्रणाम करते हुए धरती पर रख कर यही संकेत दिया कि इस बार के विष्णुवतार की लीला क्रियायोग की होगी। इसीलिए राम का जीवन सही अर्थों में मनुष्य के वरण करने योग्य ‘कर्मयोग’ है। अतः आज के युग के सही नारायणावतार, सही नारायण मूर्ति राम की है। उनकी दृष्टि में ‘रामचन्द्र भारतीय धर्म के जीवन्त विग्रह हैं। आज अक्सर लोग कहते हैं कि हिन्दू धर्म की परिभाषा क्या है? भारतीयता की परिभाषा क्या है? वह है रामचन्द्र का जीवन। उनका जीवन ही हिन्दुत्व या बृहत्तर अर्थ में भारतीयता की सटीक परिभाषा है। भारतीयता माने ‘रामत्व’। सही ढंग से भारतीय होने का अर्थ ‘राम जैसा होना’। प्रत्येक सही भारतीय जन की यही महत्वाकांक्षा होनी चाहिए।⁶ कुबेर का मानना है ‘यों तो रामकथा भारतीयों के लिए ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मानव जाति के लिए मूल्यवान् है। यह मूल्यवत्ता पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक स्तर पर आदर्श पिता, पति, भाई, पत्नी, माँ, मित्र, सहचर, नागरिक और आदर्श शासक के रूप में रामायण में सर्वत्र द्रष्टव्य है और यही इस महाकाव्य की शाश्वत सरसता एवं प्रासंगिकता है।

कुबेर के अनुसार रामकथा में रामचन्द्र का जीवन यज्ञोपम है, जो व्यक्ति अपने व्यक्तिगत राग-द्वेष, सुख-दुख से ऊपर उठकर जीवन को यज्ञ में रूपांतरित कर देता है, वही ‘कालजयी बृहत्साम’ बनकर उभरता है। रामायण का प्रत्येक पात्र इसी महिमा से मंडित है। राम का जीवन इसी यज्ञाग्नि में -- आहूत सामग्री के समान है। इसी विराट भाव और संकल्प के कारण राम ‘अग्रजन्मे सहस्रशीर्षा’ की तरह वरिष्ठ और ज्येष्ठ⁸ हैं। आदि कवि वाल्मीकि की दृष्टि इसी ‘जगती के शिखर’ शांति बिंदु⁹ पर इसीलिए केन्द्रित हुई क्योंकि रामराज्य में प्रजा के सुख के समक्ष राजा ने कभी व्यक्तिगत हितों के संदर्भ में सोचा भी नहीं। इसी रूप में राम का तेजस्वी व्यक्तित्व त्रेता में सूर्य के बिम्ब को धारण करता है। जैसे श्री, शोभा, जीवन, प्राण, मधु, तेज, परिपक्वता, संयम, तप, त्याग दाह, विराग, संघर्ष और सर्वोपरि देहातीत चिन्मयता सूर्य की वृत्तियाँ हैं, जो निरंतर गति, निरंतर कर्म और निरन्तर पुरुषार्थ योग का बिम्ब रचती हैं। जैसे मानव मंगल के लिए सूर्य का सारा कर्मयोग निर्लोभ निरासक्त है, ठीक राम भी ऐसे ही महानायक हैं जो अखंड यज्ञ के रूप में अपने जीवन को जीते हैं। वे सूर्य के ही समान आजीवन अपने हृदय को निर्ममता पूर्वक

धधकता हवन कुंड बनाकर अपनी ही हृदयगत कामनाओं की निरंतर आहूति देते हैं। जैसे सूर्य की किरणें इस सृष्टि की प्रत्येक नाड़ी में मधुपाक परोसती है जो कषाय केले और खट्टे आम को मीठा बना देती है। जीवन में परिपक्वता की मिठास भरने के लिए सूर्य अनवरत् अविराम यात्रा करता है, ठीक इसी प्रकार महानायक राम भी जीवन भर अविराम लड़ते हैं धुंध से, तमस से, कटुता और जड़ता से। तभी वे मधुसूदन भी कहलाए जो मिठास को पकाता है। वर्तमान युग में जबकि राजनीतिक प्रपंचों एवं बुद्धिजीवी वर्ग के कुतर्कों में मानवता, मौलिक सुख, शांति, स्वतन्त्रता, सृजनात्मकता, कानून, नियमों के नाम पर गिरवी रख दी गई है तब इस नरोत्तम के महान त्याग को कथित बुद्धिजीवी ‘मानवाधिकार’ के कटघरे में खड़ा कर देते हैं। इन सब भ्रामक तथ्यों का कुबेर तर्क सहित निवारण करते हैं। कुबेर सर्वात्मनाभाव से स्वयं को रामभक्त को स्वीकारते हैं कि वे रामकथा से अपने निराशा के क्षणों में जिजीविषा, करुणाबोध और अभय का त्रिभुज रचते हैं। करुणा और अभय के आधार पर ही उनकी जिजीविषा, उर्ध्वमुखी रहती है। कुबेर के लिए रामकथा इसलिए भी जीवन भर की पूंजी है क्योंकि रामावतार पूर्णतया ‘मानवीय’ हैं। मत्स्य, कच्छप, नृसिंह आदि अमानवीय हैं, तो कृष्णावतार न्यूनाधिक ‘अतिमानवीय’ परंतु पूर्णतया मानवीय रामचन्द्र ही हैं।⁸ जो अपने हृदय को वीर, करुण और शांत रस से आप्लावित रखते हैं। वीर तो ऐसे थे कि उनके जैसा आदर्श वीर हुआ ही नहीं। ‘राम दुबारा वचन को नहीं बोलता और दूसरी बार बाण नहीं मारता। अमोघ बाण, अमोघ कथन।’⁹ उनकी वीरता का आदर्श पूरे जीवन में दो बार हीन हुआ, जिसे कुबेर मानव तनु की सीमा के रूप में समझाते हैं। उनके अनुसार, “शतप्रतिशत पूर्णता ईश्वर में संभव है, अवतार में नहीं क्योंकि अवतार मानुषी तन की सीमाओं का स्वेच्छावरण है। अतः रामचन्द्र की वीरता समस्त जीवन में दो बार हीन हुई है। एक बार बाली को पेड़ की आड़ लेकर मारते समय। इसके पूर्व खर-दूषण से युद्ध में साढ़े तीन पग पीछे हटते समय - वह भी वे बिना पीठ दिखाए हटे थे।

“जिके लहहिं न रिपु रन पीठी
नहिं लावहिं परतीय मन दीठी।”¹⁰

मूलतः देखा जाए तो दोनों ही परिस्थितियां युद्ध में अधर्मी को पराभूत करने के लिए यह कभी कभी आवश्यक हो जाता है। भारतीय राजनीति शास्त्र में तभी साम, दाम, दण्ड, भेद एक विवेकी राजा की सशक्त नीतियां होती हैं।

कुबेर राम को आदर्श वीर के साथ-साथ आदर्श करुणा से युक्त चरित्र कहते हैं जो आज की राजनीति में हमारे नेतृत्वकर्ताओं में पूर्णतया नदारद हैं। ऐसी आदर्श करुणा जो राम ने उत्तरकांड में (यदि यह प्रक्षिप्त नहीं है) में भोगी थी। लोग छिछली दृष्टि से देखते हैं कि राम ने अपनी पत्नी के साथ अन्याय किया।¹¹ परंतु इसे केवल सूक्ष्म प्रज्ञावान ही समझ सकते हैं कि राम व्यक्तिगत रूप से सीता को दंडित करके स्वयं को उनसे अधिक दण्डित करते हैं और यह दण्ड एक वृहत्तर राजा के द्वारा लोकमत के समादर की तुष्टि के लिए है, आदर्श की स्थापना के लिए है। केवल राम ही नहीं, सीता भी क्षत्राणी रानी रूप में अपने राजा पति के आदर्श संकल्प की पालना हेतु ‘सती धर्म’ निभाती है। विराट दृष्टि से देखने पर राजा-रानी दोनों के लिए प्रजा हित के समक्ष संसार का समस्त ऐश्वर्य तुच्छ है और यही आदर्श स्थिति है। संभवतः इसी विराट चेतना को समझते हुए वाल्मीकि रामायण से अनुपस्थित इस कांड को ‘गोसांई’ ने ‘मानस’ में स्थान दिया है। जैसे शिव का विषपान ही अमृतत्व का संचार कर मानवता का कल्याण करता है, राम का त्यागनिष्ठ जीवन इसी दृष्टान्त को पुनः मानवावतार में दोहराता है।

कुबेर रामायण को पारिवारिक आदर्श की 'गीता' के रूप में नितान्त नई दृष्टि से व्याख्यायित करते हैं। उनकी दृष्टि में जिस तरह 'महाभारत की गीता' निष्काम कर्मयोग की व्याख्या है, वहीं रामायण की गीता 'अनासक्त पुरुषार्थ योग की गीता' है। कर्म की तुलना में पुरुषार्थ शब्द स्पष्ट रूप से जीवन की नैतिक भूमा से जुड़ा है, जो राम सहित अधिकांश रामायण चरित्रों में दृष्टिगत होती है। आम आदमी के लिए वाल्मीकि की गीता ही असली गीता है क्योंकि 'वैचारिक स्तर पर रामायण 'सत्य रक्षा और धर्म-संस्थापना'¹² के उच्चादर्शों को लेकर चलता है तो भावात्मक स्तर पर 'सहोदर प्रेम' और 'दाम्पत्य प्रेम' के जीवनादर्शों को। सही परिवार-धर्म और सही समाज-धर्म, दोनों की 'थीसिस' प्रस्तुत करता है, उसे कालजयी प्रासंगिकता प्रदान करता है। सीधी बात है 'सही समाज होने के लिए जरूरी है, सही परिवार और सही परिवार निर्भर करता है व्यक्ति के सही होने पर।³ सही का अर्थ सत्य-निष्ठा से सम्पन्न। रामायण-सम्मत-जीवन धर्म इसी समग्रता को दृष्टि में रखकर आरंभ से अंत तक उत्तम गार्हस्थ्य धर्म की गाथा है। इस महाकाव्य की सारी सकारात्मक (हां-धर्मी) Positive स्थितियां मिलकर जिस जीवन दर्शन को प्रतिपादित करती हैं, वह चार पुरुषार्थ हैं : धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। (गृहस्थी में रहते हुए परिवार के प्रति सेवा समर्पण भाव से भगवद्-भक्ति) इन चारों पुरुषार्थों के संतुलित स्वरूप में जीवन यापन करना ही व्यक्ति का सही धर्म है और इसी सही धर्म के माध्यम से सही नागरिक, सही परिवार और सही राष्ट्र की रचना हो सकती है।

निष्कर्षतः कुबेर राम-साहित्य-सागर में अवगाहन करके यही भाव मणियां प्राप्त होती हैं कि मानवता के चरम आदर्शों और संस्कारों की यह रामकथा भारतीय ज्ञान सरणि की कालजयी काव्यनिधि है, जिससे भारतीय-प्रज्ञा सदैव रससिक्त रहेगी। इसकी विचार रश्मियां वह प्रकाश-प्रसून हैं जो कालजयी बृहत्साम के रूप में हमारे मानस व्योम पर उदित होकर चित्त और चेतना को आलोकित करती रहेगी। अतः हर भारतीय की यही कामना व दृढ़ संकल्प होना चाहिए कि मानवता के चरम आदर्शों और संस्कारों की यह गाथा हर आर्य कंठ में निवास करे, और अपने आचार-विचार में इसे ही सर्वोच्च मानवधर्म के रूप में धारण करें।

संदर्भ सूची

1. कुबेरनाथ राय, 'त्रेता का बृहत्साम', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1998.
2. कुबेरनाथ राय, 'रामायण महातीर्थम्' पृ.-299
3. कुबेरनाथ राय, 'त्रेता का बृहत्साम', पृ.-9 (भूमिका)
4. कुबेरनाथ राय, 'रामायण महातीर्थम्' पृ.-297
5. पूर्ववत्-303
6. कुबेरनाथ राय, त्रेता का बृहत्साम पृ-161
7. पूर्ववत् पृ-160
8. कुबेरनाथ राय, रामायण महातीर्थम् पृ-298
9. पूर्ववत्-301
10. पूर्ववत्.302
11. कुबेरनाथ राय, त्रेता का बृहत्साम, पृ-166
12. पूर्ववत्
13. पूर्ववत्-169